

विचार बिन्दु

उधार वह मेहमान है जो एक बार आने के बाद जाने का नाम नहीं लेता। -प्रेमचंद

व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लिये वनानुभव

ची भारत के महर्षि-वैज्ञानिक पुनर्वसु आत्रेय को चिकित्सा व स्वास्थ्य-रक्षण के एक ऐसे सिद्धांत का जनक माना जाता है जिसे आज वनानुभव और प्रकृति-अनुभव (फॉरेस्ट-एक्सपीरियंस, नेचुर-एक्सपीरियंस) आदि नामों से जाना जाता है। स्वास्थ्य-रक्षण और रोगोपचार में प्राकृतिक स्थलों की भूमिका का आयुर्वेद में कम से कम 1000 साल ईसा पूर्व से वर्णन प्राप्त होता है। हाल ही में हुई शोध अब यह निर्विवाद सिद्ध करती है कि प्रकृति का सान्निध्य हमारे संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक, मानसिक और बायोफिजियोलॉजिकल स्वास्थ्य में सुधार करता है। परन्तु सबसे बड़ी बात यह है कि वर्ष 2022 तक की शोध अब यह निर्विवाद सिद्ध कर चुकी है कि वनानुभव से ह्यूमन नेचुरल फिक्स् सेल्स की क्रियात्मकता बढ़ने और इन्फ्लेमेशन कम होने सहित अनेक रास्तों के माध्यम से इम्यूनोटी बढ़ती है।

लगभग 5000 वर्ष पूर्व की बात है। आत्रेय के शिष्य अग्निवेश ने अपने गुरु से एक प्रश्न किया:—भगवन! देखने में आता है कि हितकारी आहार का उपयोग करते हुये भी कुछ लोग रोगी हो जाते हैं, जबकि अहितकारी आहार लेते हुये भी कुछ लोग निरोगी देखे जाते हैं। ऐसी स्थिति में क्या अच्छा है और क्या बुरा, इसकी पहचान कैसे की जाये? इस प्रश्न का जो उत्तर आत्रेय ने दिया, वह आज भी यथावत विज्ञान-संगत है।

आत्रेय का उत्तर था:—अग्निवेश! हितकारी आहार करने वाले लोगों में आहार के कारण होने वाले रोग उत्पन्न नहीं होते और हितकारी आहार लेने मात्र से समस्त रोगों का भय दूर नहीं हो जाता। हानिकारक भोजन के अलावा भी रोगों के ताम्रकारण, जैसे ऋतुओं का विपरित होना, प्रज्ञापराध या जानबूझकर गलती करना, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध का अतिव्योम, मिथ्या योग एवं विषम योग आदि ऐसे कारण हैं जो उचित भोजन लेने के बावजूद भी मनुष्य को बीमार कर देते हैं। इसीलिये हितकारी आहार लेने वाले रोगी हो जाते देखे जाते हैं। हानिकारक आहार का उपयोग करने वालों में पथ्य, आहार, व शरीर की स्थिति में भिन्नता होने से हानिकारक आहार तुल्य हानि नहीं पहुंचा पाता। सभी अपथ्य बराबर दोष वाले नहीं होते, न ही सभी दोष बराबर बलवान होते, और न सभी शरीर व्याधिक्षमत्व या रोग प्रतिरोधक क्षमता से संपन्न होते (न च सर्वाणि शरीराणि व्याधिक्षमत्वे समर्थानि भवन्ति। च.सू.28.7.) इस बात में कोई संदेह नहीं है कि एक ही अपथ्य आहार जगह, समय, संयोग, वीर्य, व मात्रा की भिन्नता के कारण या ज्यादा खा लेने से और अधिक अपथ्य हो जाता है। वहीं दोष विविध कारणों से, विरुद्ध चिकित्सा वाला, धातुओं में पहुंचा हुआ, शरीर के प्राणवर्तनों में उत्पन्न, मर्म पर चोट करने वाला, अत्यंत कष्टदायी अतिशय जल्दी रोगों को उत्पन्न करने वाला होता है। अंत में आत्रेय यह भी बताते हैं कि मूल रूप से शरीर की बनवट भी नैसर्गिक व्याधिक्षमत्व पर प्रभाव डालती है। बहुत मोटे या बहुत दुबले लोग, रक्त, मांस, व अस्थियों के सुसंगठित न होने के कारण बेडौल शरीर वाले लोग, दुर्बल, अल्पसत्त्व या कमजोर मनोबल वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता नहीं होती। जबकि इनके उलट लक्षणों वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता होती है। इन अपथ्य आहारों, दोषों व शरीर की भिन्नता के कारण बीमारियों भी कम या ज्यादा, जल्दी या देर से उत्पन्न होती हैं।

जिस व्यक्ति का सहज (इनेट) या युक्तिकृत (डेराइव्ड) व्याधिक्षमत्व मजबूत है वह मुश्किल से ही बीमार पड़ता है। यदि बीमार पड़ भी जाये तो बीमारी अपना बल मुश्किल से ही दिखा पाती है। व्याधिक्षमत्व में दो शब्द निहित हैं, व्याधि एवं क्षमत्व। व्याधि का तात्पर्य शरीर की धातुओं (रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र) में विषमता उत्पन्न होना है। क्षमत्व से तात्पर्य इस विषमता को न होने देने की क्षमता है। मानसिक बीमारियों के सन्दर्भ में सत्त्व गुण जितना अधिक होगा, व्याधिक्षमत्व उतना ही बेहतर होगा। शरीर में सहज व्याधिक्षमत्व के सन्दर्भ में यह बात महत्वपूर्ण है कि शरीर में दुरुस्त मांसपेशियों, संरचना, स्वस्थ व मजबूत इन्द्रियों वाला व्यक्ति रोगों के बल से कभी प्रभावित नहीं होता। भूख, प्यास, ठंडी, गर्मी, व्यायाम को ठीक से सहन करने वाला, सम आन वाला, बुढ़ाई की उम्र में ही बुढ़ा होने वाला, मांसपेशियों के सही कृष या बला व्यक्ति ही स्वस्थ है (च.सू.21.18): समसांप्रमाणस्तु समसहनो नरः। दुर्बेन्द्रिय विकाराणां न बलेनाधिभूयते। धृतिपाततापसहः शीतव्यायामसहसः। समपक्ता समजरः समसांचयो मतः॥

आधुनिक वैज्ञानिक संदर्भ में व्याधिक्षमत्व को इम्यूनोटी कहा जाता है। यह प्रतिरक्षा तंत्र संक्रमण, बीमारी या अन्य अवांछित तत्वों के आक्रमण से बचने के लिये शरीर की सुरक्षा प्रदान करता है। व्याधिक्षमत्व में कमी होने से शरीर इम्यूनो-कोम्प्रोमाइज्ड स्थिति में आ जाता है। ऐसी स्थिति में शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता कम होने से रोगजनन आसानी से होता है। इम्यूनोटी किसी व्यक्ति के शरीर में विशिष्ट एन्टीबॉडी या श्वेतरक्त कोशिकाओं की क्रिया से किसी विशेष संक्रमण, विषाक्त पदार्थ या हानिकारी जीव-शैली से होने वाले रोगों का प्रतिरोध करने की क्षमता के रूप में समझा जाता है।

व्यक्ति की मूल प्रकृति का बल से सीधा सम्बन्ध होता है। सबसे उत्तम सम प्रकृति (वात-पित्त-कफज) है, परन्तु किसी जनसंख्या में समप्रकृति वाले बहुत कम होते हैं। अतः व्यवहार में कफ प्रकृति वालों को बेहतर बल वाला माना जाता है। इसके साथ ही सार भी बल को प्रभावित करता है। सारयुक्त से तात्पर्य यह है कि व्यक्ति में साररूप धातुओं का नियमित निर्माण होता है। सार धातुओं के सम्यक प्रकार से उत्पन्न होते रहने पर शरीर में व्याधिक्षमत्व बढ़िया बना रहता है।

आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार इम्यूनोटी मूलतः दो प्रकार से समझी जा सकती है:—इनेट (जन्मजात) और एडाप्टिव (अनुकूलनीय)। इनेट-इम्यूनोटी प्रतिरक्षा की पहली पंक्ति है जो पैथोजेन को मारने वाली कोशिकाओं जैसे-न्यूट्रोफिल और मैक्रोफेज द्वारा संपादित की जाती है। किसी विषाणु का संक्रमण होने पर ये किलर-सेल्स तेज गति से सबसे पहले अपना काम करती हैं। एडाप्टिव-इम्यूनोटी की क्रियात्मकता तुलनात्मक रूप से धीमी होती है। इस तंत्र में टी-कोशिकाओं, बी-कोशिकाओं और एंटीबॉडी जैसी व्यवस्था है जो विशिष्ट रोगजनकों पर प्रतिक्रिया देती है।

आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार इम्यूनोटी मूलतः दो प्रकार से समझी जा सकती है:—इनेट (जन्मजात) और एडाप्टिव (अनुकूलनीय)। इनेट-इम्यूनोटी प्रतिरक्षा की पहली पंक्ति है जो पैथोजेन को मारने वाली कोशिकाओं जैसे-न्यूट्रोफिल और मैक्रोफेज द्वारा संपादित की जाती है। किसी विषाणु का संक्रमण होने पर ये किलर-सेल्स तेज गति से सबसे पहले अपना काम करती हैं। एडाप्टिव-इम्यूनोटी की क्रियात्मकता तुलनात्मक रूप से धीमी होती है। इस तंत्र में टी-कोशिकाओं, बी-कोशिकाओं और एंटीबॉडी जैसी व्यवस्था है जो विशिष्ट रोगजनकों पर प्रतिक्रिया देती है।

शैली से होने वाले रोगों का प्रतिरोध करने की क्षमता के रूप में समझा जाता है। आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार इम्यूनोटी मूलतः दो प्रकार से समझी जा सकती है:—इनेट (जन्मजात) और एडाप्टिव (अनुकूलनीय)। इनेट-इम्यूनोटी प्रतिरक्षा की पहली पंक्ति है जो पैथोजेन को मारने वाली कोशिकाओं जैसे-न्यूट्रोफिल और मैक्रोफेज द्वारा संपादित की जाती है। किसी विषाणु का संक्रमण होने पर ये किलर-सेल्स तेज गति से सबसे पहले अपना काम करती हैं। एडाप्टिव-इम्यूनोटी की क्रियात्मकता तुलनात्मक रूप से धीमी होती है। इस तंत्र में टी-कोशिकाओं, बी-कोशिकाओं और एंटीबॉडी जैसी व्यवस्था है जो विशिष्ट रोगजनकों पर प्रतिक्रिया देती है।

शैली से होने वाले रोगों का प्रतिरोध करने की क्षमता के रूप में समझा जाता है। आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार इम्यूनोटी मूलतः दो प्रकार से समझी जा सकती है:—इनेट (जन्मजात) और एडाप्टिव (अनुकूलनीय)। इनेट-इम्यूनोटी प्रतिरक्षा की पहली पंक्ति है जो पैथोजेन को मारने वाली कोशिकाओं जैसे-न्यूट्रोफिल और मैक्रोफेज द्वारा संपादित की जाती है। किसी विषाणु का संक्रमण होने पर ये किलर-सेल्स तेज गति से सबसे पहले अपना काम करती हैं। एडाप्टिव-इम्यूनोटी की क्रियात्मकता तुलनात्मक रूप से धीमी होती है। इस तंत्र में टी-कोशिकाओं, बी-कोशिकाओं और एंटीबॉडी जैसी व्यवस्था है जो विशिष्ट रोगजनकों पर प्रतिक्रिया देती है।

शैली से होने वाले रोगों का प्रतिरोध करने की क्षमता के रूप में समझा जाता है। आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार इम्यूनोटी मूलतः दो प्रकार से समझी जा सकती है:—इनेट (जन्मजात) और एडाप्टिव (अनुकूलनीय)। इनेट-इम्यूनोटी प्रतिरक्षा की पहली पंक्ति है जो पैथोजेन को मारने वाली कोशिकाओं जैसे-न्यूट्रोफिल और मैक्रोफेज द्वारा संपादित की जाती है। किसी विषाणु का संक्रमण होने पर ये किलर-सेल्स तेज गति से सबसे पहले अपना काम करती हैं। एडाप्टिव-इम्यूनोटी की क्रियात्मकता तुलनात्मक रूप से धीमी होती है। इस तंत्र में टी-कोशिकाओं, बी-कोशिकाओं और एंटीबॉडी जैसी व्यवस्था है जो विशिष्ट रोगजनकों पर प्रतिक्रिया देती है।

शैली से होने वाले रोगों का प्रतिरोध करने की क्षमता के रूप में समझा जाता है। आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार इम्यूनोटी मूलतः दो प्रकार से समझी जा सकती है:—इनेट (जन्मजात) और एडाप्टिव (अनुकूलनीय)। इनेट-इम्यूनोटी प्रतिरक्षा की पहली पंक्ति है जो पैथोजेन को मारने वाली कोशिकाओं जैसे-न्यूट्रोफिल और मैक्रोफेज द्वारा संपादित की जाती है। किसी विषाणु का संक्रमण होने पर ये किलर-सेल्स तेज गति से सबसे पहले अपना काम करती हैं। एडाप्टिव-इम्यूनोटी की क्रियात्मकता तुलनात्मक रूप से धीमी होती है। इस तंत्र में टी-कोशिकाओं, बी-कोशिकाओं और एंटीबॉडी जैसी व्यवस्था है जो विशिष्ट रोगजनकों पर प्रतिक्रिया देती है।

शैली से होने वाले रोगों का प्रतिरोध करने की क्षमता के रूप में समझा जाता है। आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार इम्यूनोटी मूलतः दो प्रकार से समझी जा सकती है:—इनेट (जन्मजात) और एडाप्टिव (अनुकूलनीय)। इनेट-इम्यूनोटी प्रतिरक्षा की पहली पंक्ति है जो पैथोजेन को मारने वाली कोशिकाओं जैसे-न्यूट्रोफिल और मैक्रोफेज द्वारा संपादित की जाती है। किसी विषाणु का संक्रमण होने पर ये किलर-सेल्स तेज गति से सबसे पहले अपना काम करती हैं। एडाप्टिव-इम्यूनोटी की क्रियात्मकता तुलनात्मक रूप से धीमी होती है। इस तंत्र में टी-कोशिकाओं, बी-कोशिकाओं और एंटीबॉडी जैसी व्यवस्था है जो विशिष्ट रोगजनकों पर प्रतिक्रिया देती है।

ख्वाजा साहब की महाना छठी पर देशभर से अकीदतमंद उमड़े

ख्वाजा गरीब नवाज की महाना छठी पर देश में अमन-चैन, शांति व भाईचारा की दुआ मांगी

अजमेर, (कास)। मोहर्रम यानी (मिनी उर्स) पर दरगाह परिसर में परंपरा के अनुरूप धार्मिक रस्में अदा की जा रही हैं। ख्वाजा साहब की दरगाह में देशभर के जायरीनों की भीड़ उमड़ रही है। शनिवार को ख्वाजा गरीब नवाज की महाना छठी शिदत और धार्मिक परंपरागत तरीके से मनाई गई। देश में अमन चैन, शांति व भाईचारा की दुआ मांगी गई। इस दौरान दरगाह परिसर अकीदतमंदों से खचाखच भरा रहा। मोहर्रम की सात तारीख रविवार को दरगाह परिसर में रखे ताजिए पर मेहंदी की रस्म अदा की जाएगी, सड़ों का जुलूस निकलेगा।

सूफी संत ख्वाजा साहब की दरगाह परिसर स्थित आहला-ए-नूर में शनिवार सुबह 9 बजे महाना छठी मनाई गई। ख्वाजा साहब की महाना छठी की फातेहा का आयोजन हुआ। दरगाह कमेटी के मौलाना ने ख्वाजा साहब की जीवनी और उनकी शिक्षाओं के बारे में जानकारी दी।

खुदाम-ए-ख्वाजा की ओर से गरीब नवाज की शान में नात व मनकबत पेश किए गए साथ ही ख्वाजा साहब की जीवनी तथा शिक्षाओं पर बयान देकर मुल्क में अमन चैन, शांति, खुशहाली, भाईचारे एवं तरक्की के लिए दुआ की गई। दरगाह में मौजूद अकीदतमंदों व जायरीनों में तबर्कू तकसीम किया गया। छठी शरीफ और



मोहर्रम और ख्वाजा साहब की महाना छठी पर दरगाह परिसर व बाहर अकीदतमंदों की भीड़ उमड़ी।

मोहर्रम के चलते दरगाह परिसर पूरी तरह जायरीन से खचाखच भरा हुआ था। इस अवसर पर दरगाह कमेटी द्वारा जायरीन के लिए लंगर का आयोजन किया गया।

मोहर्रम की सात तारीख रविवार को दरगाह स्थित लंगरखाने से सड़ों का जुलूस निकाला जाएगा।

महफिलखाने पर चांदी का ताजिया आम जायरीन की जियारत के लिए रखा जाएगा तथा अन्न की नमाज के बाद मेहंदी की रस्म अदा की जाएगी। इमाम बाराह लंगर खाना से सात मोहर्रम को जुलूस प्रारंभ होगा। मोहल्ला सिपाहीयान में ताजिया रखा जाएगा। मसिन्याखानी और बयान

शाहदत का मिलसिला योमे आशुर तक चलेगा। योमे आशुरा पर चांदी का ताजिया और डोला रूपी ताजिए की सवारी निकाली जाएगी। सवारी लंगर खाना इमाम बाराह से प्रारंभ होकर दरगाह बाजार, अंदरकोट होते हुए बड़बाव पहुंचेगी, सलतो सलाम पढ़ने के बाद ताजिए को सैराब किया जाएगा।

■ ख्वाजा साहब की दरगाह में देशभर के जायरीनों की भीड़ उमड़ रही है
■ मोहर्रम पर सड़ों का जुलूस व मेहंदी की रस्म आज निभाई जायेगी

बदरुद्दीन कुरैशी ने बताया कि हर साल की तरह इस साल भी मोहर्रम की 7 तारीख पर हजरत कासिम अलैहिससलाम की याद में पेश की जाने वाली मेहंदी की रस्म अदा की जाएगी।

उन्होंने बताया कि नागफनी दरगाह संपर्क सड़क से कुरैशी समाज के परिवार और ताराशाह नगर हुसैनी मोहल्ला विकास समिति की ओर मेहंदी पेश की जाती है। कुरैशी ने बताया कि अंदरकोट, त्रिपोलिया गेट, दरगाह बाजार, निजाम गेट होते हुए दरगाह शरीफ मकबरे पर बड़े ताजिया पर मेहंदी पेश कर रस्म अदा की जाएगी। रस्म में सर्वधर्म कौमी एकता समिति के पदाधिकारी भी सम्मिलित होंगे। मेहंदी से पूर्व दरगाह संपर्क सड़क पर सर्वधर्म प्रतिनिधियों द्वारा पौधरोपण किया जाएगा।

जे.एल.एन. मेडिकल कॉलेज को पार्थिव देह दान की

अजमेर, (कास)। अजमेर के कोटड़ा निवासी प्रेमानाथ टंडन का शनिवार को निधन होने के बाद उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार परिजनों ने उनकी पार्थिव देह को जेएलएन मेडिकल कॉलेज को दान किया। टंडन ने अपने जीवनकाल में देहदान का संकल्प लिया था।

टंडन के परिजन ने बताया कि प्रेमानाथ टंडन (67) का शनिवार को देहांत होने के बाद पार्थिव देह लेकर

■ अजमेर के कोटड़ा निवासी प्रेमानाथ टंडन का शनिवार को निधन हो गया था
■ टंडन की अंतिम इच्छा के अनुसार परिजनों ने उनकी पार्थिव देह जवाहरलाल नेहरु मेडिकल कॉलेज को सौंपी

जवाहर लाल नेहरु मेडिकल कॉलेज पहुंचे, जहां मेडिकल कॉलेज के चिकित्सकों की मौजूदगी में देहदान

किया गया। टंडन के परिजन ने कहा कि देहदान करने की प्रेमानाथ की अंतिम इच्छा थी, जिसे परिजन ने आज

पूरा किया है। प्रेमानाथ टंडन के मित्र ने बताया कि क्रिश्चियन गंज टेलर का कार्य करते थे।

मेडिकल कॉलेज के चिकित्सकों ने देहदान को एक सराहनीय कदम बताया, जो मेडिकल शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। मेडिकल छात्रों के लिए मानव शरीर की संरचना और कार्यप्रणाली को समझने के लिए

वास्तविक शारीरिक संरचनाओं पर अध्ययन करना आवश्यक होता है। इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री का आभाव होने पर छात्रों को कटिनाईयों का सामना करना पड़ता है। देहदान से न केवल छात्रों को बेहतर शिक्षा मिलती है, बल्कि भविष्य में बेहतर चिकित्सक बनने में भी सहायता मिलती है। कॉलेज प्रशासन ने टंडन के परिवार का आभार व्यक्त किया।

अरावली साइकिल यात्रा अभियान दल डूंगरपुर पहुंचा, लोगों ने जवानों का हौसला बढ़ाया

डूंगरपुर, (निस)। भारतीय सेना के अदम्य साहस एवं प्रारक्रम का प्रतिक बने कारगिल युद्ध विजय की रजत जयंती के उपलक्ष में भारतीय सेना द्वारा आयोजित अरावली साइकिल यात्रा अभियान दल जब डूंगरपुर पहुंचा तो शहरवासियों ने जगह-जगह पर पुष्प वर्षा कर सैनिकों का मनोबल बढ़ाया। वहीं, जवानों का हौसला देखकर शहरवासियों में एक नये उत्साह का संचार हुआ। नसीराबाद से प्रारंभ साइकिल रैली जब डूंगरपुर के मोतली मोड़ पहुंची तो नगर सभापति अमृत कलासुआ, उपसभापति सुदर्शन जैन, कार्यवाहक आयुक्त कुलदीप सिंह, हरीश पाटीदार, डॉ. अरविन्द शर्मा, हरदील अजीज, इमरान आदि ने जवानों का माल्यापर्ण कर स्वागत किया और अभियान के बारे में जानकारी प्राप्त की।



अरावली साइकिल यात्रा अभियान दल का डूंगरपुर में शहरवासियों ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया।

सैनिक दल के साइकिल यात्रा के साथ मोतली मोड़ से डूंगरपुर पहुंचने पर ब्रह्मकुमारी इंडियन विश्व विद्यालय की प्रमुख संचालिका पद्मा दीदी एवं विजयलक्ष्मी दीदी के सान्निध्य में सैकड़ों गणमान्य लोगों द्वारा पुष्प वर्षा के साथ भारत माता के जयकारों के साथ सेना के जवानों में एक नया उत्साह भर दिया। कर्नल डॉ. केशी शर्मा के नेतृत्व में शहर के पूर्व सैनिक किशोर जोशी, शहदत मोहन, भोगीलाल परमार सहित बड़ी संख्या

में उपस्थित पूर्व सैनिकों ने अपने सैन्य साथियों से भेंट कर अपने शहर एवं जिले की जानकारी दी। इस अवसर पर ब्रह्मकुमारी आश्रम परिसर में आयोजित स्वागत समारोह को संबोधित करते हुये अग्रिवाह दल का नेतृत्व कर रहे युवा अधिकारी ने कारगिल युद्ध में भारतीय सेना के साहसिक एवं विरता से परिपूर्ण प्रदर्शन की जानकारी दी एवं ऑपरेशन विजय के दौरान अपना सर्वोच्च बलिदान कर चुके अमर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित

की। साथ ही जिले के अमर शहीद कालिया की पत्नी वीरनारी कल्लोबाई का उरण और बुके भेंट कर सम्मान किया। इस अवसर पर आयोजित समारोह में उपनिदेशक सूचना एवं प्रसार विभाग छाया चौबीसा, राजू भाई पंचाल, विनय चौबीसा, प्रवीण श्रीमाल, राजेश जैन, रमेश बरियानी, विनोद पंचाल, हरीप्रसाद शर्मा, भूपेश जोशी, सतीश अग्रवाल, चंदन राव, शारदा मालपाणी, शीतल भट्ट, शिला श्रीमाल, चन्द्रिका पटेल, रमा शाह, अंशुमाला

पंचाल, सुभद्रा पण्डया, दक्षा कलाल, प्रतिमा शर्मा, हेमा चौबीसा, गुरमोत कौर सहित बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों ने माल्यापर्ण स्वागत किया। वहीं बहनों ने कलाई पर रक्षा सुत्र बांधे। समारोह में शहर के दिल की आवाज ग्रुप द्वारा दी गई प्रस्तुतियों में गायिका नीता जोशी ने जैसे ही ए मेरे वतन के लोगों जरा आंख में भर लों गीत प्रारंभ किया तो शहीदों की याद में उपस्थित लोगों की आंखें नम हो गईं। वहीं गिरीश जोशी, ब्रदी सुधार ने जलवा

■ शहरवासियों ने जगह-जगह पर पुष्प वर्षा कर सैनिकों का मनोबल बढ़ाया

■ भारतीय सेना द्वारा आयोजित अरावली साइकिल यात्रा 1145 किमी की है

तेरा जलवा... गीत गाकर देशभक्ति का समा बांधा जिस पर जवान और उपस्थित लोग थिरकने पर मजबूर हो उठे। कार्यक्रम के दौरान गुरुकुल विद्यालय की बालिकाओं ने शहीद केप्टन विक्रम बत्रा को समर्पित नृत्य नाटिका प्रस्तुत की, वहीं नवीनतम पंड्या, कीमी सोमपुरा आदि ने जवानों के स्वागत में देशभक्ति गीत प्रस्तुत किये।

गुजरात के लिये रवाना हुआ साइकिल अभियान दल:—9 जुलाई को नसीराबाद छावनी से रवाना हुआ अपने चौथे दिन अग्रिवाह साइकिल दल जिले में पड़वा के बाद अपनी 1145 किमी की यात्रा को आगे बढ़ाते हुए शनिवार प्रातः 6 बजे रवाना हुआ। इस अवसर पर कर्नल डॉ. के.सी.शर्मा, विजयलक्ष्मी दीदी, पद्मा दीदी, हेमेश, अरविन्द शर्मा ने झंडी दिखाकर यात्रा को रवाना किया और साथ ही शुभकामनाएं भी दी।

राशिफल रविवार 14 जुलाई, 2024



पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2081, चित्रा नक्षत्र रात्रि 10:06 तक, शिव योग प्रातः 6:15 तक, बव करण सायं 5:26 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 8:43 से तुला राशि में संचार करेगा।
ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-वृष, बुध-कर्क, गुरु-वृष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।
आज रवियोग रात्रि 10:06 से आरम्भ होगा। आज दुर्गाष्टमी, परशुरामष्टमी, खरसी पूजा है। आज से अष्टानिक महापर्व आरम्भ होगा।
श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:27 से 9:09 तक, लाभ-अमृत 9:09 से 12:32 तक, शुभ 2:14 से 3:56 तक। राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:46, सूर्यास्त 7:19

मेघ	सिंह	धनु
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।	परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात होगी और मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जा सकते हैं।	आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए/दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लेंगे। घर-परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादिता मामलों से राहत मिल सकती है।
वृष	कन्या	मकर
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटक हुए कार्य बनने लेंगे। अनहोनी की आशंका से बचा हुआ मन का ध्यान रहेगा।	परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।	अपने आवश्यक और कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।
मिथुन	तुला	कुंभ
धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। आवश्यक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।	मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लेंगे।	घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।
कर्क	वृश्चिक	मीन
घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।	घर-गृहस्थिक के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब होगा।	चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।